

ଜିହାଦ କା ଅର୍ଥ ହେ : ଗୁନାହों ସେ ବଚନେ କେ ଲିଂ ଅପନୀ ଆତ୍ମା ସେ ଲଢ଼ନା । ଗର୍ଭାବସ୍ଥା କା ଦର୍ଦ୍ଦ ସହନେ କେ ଲିଂ ଗର୍ଭାବସ୍ଥା ମେଁ ମାଁ କା ସଂଘର୍ଷ ଖି ଜିହାଦ ହେ । ଓକ୍ ଛାତ୍ର କା ପଢ଼ାଈ ମେଁ ମେହନତ କରନା ଖି ଜିହାଦ ହେ । ଅପନେ ଧନ, ସମ୍ମାନ ଓଁ ଧର୍ମ କି ରକ୍ଷା କି ପ୍ରୟାସ ଖି ଜିହାଦ ହେ । ଯହାଁ ତକ୍ କି ଇବାଦତों ମେଁ ଧୈର୍ଯ୍ୟ ରଖନା ଜୈସେ କି ରୋଜା ରଖନା ଓଁ ସମୟ ପର ନମାଜ୍ ପଢ଼ନା ଖି ଜିହାଦ କେ ପ୍ରକାରों ମେଁ ସେ ମାନା ଜାତା ହେ ।

ମାଲୁମ୍ ହୁଆ କି ଜିହାଦ କା ଅର୍ଥ ମାସୁମ ଓଁ ସଂଧି କେ ସାଥ୍ ରହନେ ବାଲେ ଗୈର-ମୁସ୍ଲିମों କି ହତ୍ୟା କରନା ନହିଁ ହେ, ଜୈସା କି କୁଛ୍ ଲୋଗ୍ ସମଜ୍ଜତେ ହେଁ ।

ଇସ୍ଲାମ୍ ଜୀବନ କା ସମ୍ମାନ କରତା ହେ । ଓସକି ନଜ୍ର ମେଁ ସଂଧି କେ ସାଥ୍ ରହନେ ବାଲେ ଲୋଗों ଓଁ ଆମ୍ ଶହରୀୟों କି ମାରନା ସହି ନହିଁ ହେ । ଇସି ତରହ୍ ଯୁଦ୍ଧ କେ ସମୟ ଖି ସଂପତ୍ତିୟों, ବଚ୍ଚों ଓଁ ମହିଲାଓଁ କି ରକ୍ଷା କରନା ବାଜିବ୍ ହେ । ମାରେ ଜାନେ ବାଲେଁ କି ଶକ୍ଲେଁ କି ବିଗାଢ଼ନା ଯା ଓନକା ମୁସ୍ଲା କରନା (ହାଥ୍, ପୈର, ନାକ, କାନ କାଟନା ଯା ଆଁଖ୍ ଫୋଢ଼ନା) ଜାୟଜ୍ ନହିଁ ହେ । ଯହ୍ ଇସ୍ଲାମି ଚରିତ୍ର ନହିଁ ହେ ।

"ଅଲ୍ଲାହ୍ ତୁମ୍ହେଁ ଇସ୍ ସେ ନହିଁ ରୋକତା କି ତୁମ୍ ଓନ ଲୋଗों ସେ ଅଛ୍ଛା ବ୍ୟବହାର କରୌ ଓଁ ଓନକେ ସାଥ୍ ନ୍ୟାୟ କରୌ, ଜିନ୍ହେଁନେ ତୁମ୍ ସେ ଧର୍ମ କେ ବିଷୟ ମେଁ ଯୁଦ୍ଧ ନହିଁ କିୟା ଓଁ ନ ତୁମ୍ହେଁ ତୁମ୍ହାରେ ଘରों ସେ ନିକାଲା । ନିଶ୍ଚୟ୍ ଅଲ୍ଲାହ୍ ନ୍ୟାୟ କରନେ ବାଲେଁ ସେ ପ୍ରେମ କରତା ହେ । ଅଲ୍ଲାହ୍ ତୌ ତୁମ୍ହେଁ କେବଲ୍ ଓନ ଲୋଗों ସେ ମୈତ୍ରି ରଖନେ ସେ ରୋକତା ହେ, ଜିନ୍ହେଁନେ ତୁମ୍ ସେ ଧର୍ମ କେ ବିଷୟ ମେଁ ଯୁଦ୍ଧ କିୟା ତଥା ତୁମ୍ହେଁ ତୁମ୍ହାରେ ଘରों ସେ ନିକାଲା ଓଁ ତୁମ୍ହେଁ ନିକାଲନେ ମେଁ ଓକ୍-ଦୂସାରେ କି ସହାୟତା କି । ଓଁ ଯୌ ଓନସେ ମୈତ୍ରି କରେଗା, ତୌ ବହି ଲୋଗ୍ ଅତ୍ୟାଚାରି ହେଁ ।"

[159] କୁରାନ୍ କରୀମ୍ ମସୀହ୍ ଓଁ ମୂସା କେ ସମୁଦାୟों ମେଁ ସେ ଓନକେ ଜ୍ମାନା କେ ଓକ୍ ଓସ୍ତରବାଦି ଲୋଗों କି ସରାହନା କରତା ହେ ।

"ଈସି କାରଣ, ହମ୍ନେ ବନି ଇସରାଈଲ୍ ପର ଲିଖ୍ ଦିୟା କି ନି:ସଂଦେହ୍ ଜିସନେ କିସି ପ୍ରାଣି କି କିସି ପ୍ରାଣି କେ ଖୁନ (କେ ବଦଲେ) ଅଥବା ଧରତୀ ମେଁ ବିଦ୍ରୋହ୍ କେ ବିନା ହତ୍ୟା କର ଦି, ତୌ ମାନୌ ଓସନେ ସାରେ ଇନସାନେଁ କି ହତ୍ୟା କର ଦି, ଓଁ ଯିସନେ ଓସେ ଜୀବନ ପ୍ରଦାନ କିୟା, ତୌ ମାନୌ ଓସନେ ସାରେ ଇନସାନେଁ କି ଜୀବନ ପ୍ରଦାନ କିୟା । ତଥା ନି:ସଂଦେହ୍ ଓନକେ ପାସ୍ ହମାରେ ରସୂଲ୍ ସ୍ପଷ୍ଟ ପ୍ରମାଣ୍ ଲେକ୍ ଆଓ । ଫିର ନି:ସଂଦେହ୍ ଓନମେଁ ସେ ବହୁତ୍ ସେ ଲୋଗ୍ ଓସକେ ବାଦ୍ ଖି ଧରତୀ ମେଁ ନିଶ୍ଚୟ୍ ସୀମା ସେ ଆଗେ ବଢ଼ନେ ବାଲେ ହେଁ ।" [160] [ସୂରା ଅଲ-ମାଈଦା : 32]

ଗୈର-ମୁସ୍ଲିମ୍ ଇନ ଚାରों ମେଁ ସେ ଓକ୍ ହୌଗା :

ମୁସ୍ତାମିନ୍ ଯାନି ସୁରକ୍ଷା ପ୍ରାପ୍ତ କରକେ ରହନେ ବାଲା : ଓେସା ଗୈର-ମୁସ୍ଲିମ୍ ଜିସେ ସୁରକ୍ଷା ପ୍ରଦାନ କି ଗର୍ଈ ହୌ ।

"ଓଁ ଯଦି ମୁସ୍ଲିମ୍ କେଁ ମେଁ ସେ କୌଈ ତୁମ୍ ସେ ଶରଣ୍ ମାଁଗେ, ତୌ ଓସେ ଶରଣ୍ ଦେ ଦୌ, ଯହାଁ ତକ୍ କି ବହ୍ ଅଲ୍ଲାହ୍ କି ବାଣୀ ସୁନେ । ଫିର ଓସେ ଓସକେ ସୁରକ୍ଷିତ୍ ସ୍ଥାନ୍ ତକ୍ ପହୁଁଚା ଦୌ । ଯହ୍ ଇସ୍ ଲିଂ କି ନି:ସଂଦେହ୍ ବେ ଓେସେ ଲୋଗ୍ ହେଁ, ଯୌ ଜ୍ଞାନ ନହିଁ ରଖତେ ।" [161] [ସୂରା ଅଲ-ତୌବା : 6]

ମୁଆହ୍ଦ୍ ଯାନି ସଂଧି କେ ଆଧାର୍ ପର ରହନେ ବାଲା : ଓେସା ଗୈର-ମୁସ୍ଲିମ୍ ଜିସକେ ସାଥ୍ ମୁସ୍ଲମାନେଁ ନେ ଲଢ଼ାଈ ନ

करने की संधि कर रखी हो।

"तो यदि वे अपनी शपथ को अपना वचन देने के पश्चात तोड़ दें, और तुम्हारे धर्म की निंदा करें, तो कुफ़्र के प्रमुखों से युद्ध करो। क्योंकि उनकी शपथों का कोई विश्वास नहीं, ताकि वे (अत्याचार से) रुक जाएँ।" [162] [सूरा अल-तौबा : 12]

ज़िम्मी : ज़िम्मा वचन को कहते हैं। ज़िम्मा वाला अर्थात् ऐसा गैर-मुस्लिम जिसने मुसलमानों से इस बात पर समझौता कर रखा हो कि वह अपने धर्म को मानने एवं शांति एवं सुरक्षा प्राप्त करने के बदले कुछ निर्धारित शर्तों के पालन करने के साथ टैक्स अदा करेगा। यह उनकी क्षमता के अनुसार भुगतान की जाने वाली एक छोटी-सी राशि है, जो केवल सक्षम व्यक्ति से लिया जाता है न कि दूसरों से। सक्षम व्यक्ति से मुराद स्वतंत्र वयस्क पुरुष है। महिलाओं, बच्चों और बुद्धि न रखने वालों को इससे अलग रखा गया है। कुरआन में आए हुए शब्द "सागिरून" का अर्थ है अल्लाह के क़ानून के सामने झुके हुए। जबकि आज जो लाखों लोग टैक्स अदा करते हैं, उसमें सभी सदस्य शामिल होते हैं, राशि भी बहुत बड़ी होती है। यह टैक्स हुकुमत द्वारा उनकी देख-भाल किए जाने के बदले में अदा किया जाता है। लाग इस मानव निर्मित क़ानून के सामने भी झुके हुए हैं।

"(ऐ ईमान वालो!) उन किताब वालों से युद्ध करो, जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न अंतिम दिन (क्रियामत) पर, और न उसे हARAM समझते हैं, जिसे अल्लाह और उसके रसूल ने हARAM (वर्जित) किया है और न सत्धर्म को अपनाते हैं, यहाँ तक कि वे अपमानित होकर अपने हाथ से जिज़या दें।" [163] [सूरा अत-तौबा : 29]

मुहारिब : ऐसा गैर-मुस्लिम जिसने मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध का एलान कर रखा हो। उसके साथ न कोई वचन हो, न उसे ज़िम्मा दिया गया हो और न ही उसे सुरक्षा प्रदान की गई हो। इन्हीं लोगों के बारे अल्लाह तआला ने कहा है :

"हे ईमान वालो! उनसे उस समय तक युद्ध करो, यहाँ तक कि फ़ितना (अत्याचार तथा उपद्रव) समाप्त हो जाए और धर्म पूरा अल्लाह के लिए हो जाए। तो यदि वे (अत्याचार से) रुक जाएँ, तो अल्लाह उनके कर्मों को देख रहा है।" [164] [सूरा अल-अनफ़ाल : 39]

युद्ध करने वाले गिरोह का केवल मुक़ाबला करना है। अल्लाह ने उसकी हत्या का आदेश नहीं दिया है। मुक़ाबला और सामना करने का आदेश दिया है। दोनों बातों में बहुत बड़ा अंतर है। इस आयत क़िताल, जंग में आत्मरक्षा में योद्धा का सामना करने के अर्थ में है। यह बात तमाम मानव निर्मित क़ानूनों में भी मौजूद है।

"तथा अल्लाह की राह में उनसे युद्ध करो, जो तुमसे युद्ध करते हों और अत्याचार न करो। अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।" [165] [सूरा अल-बक्रा : 190]

हम अक्सर एकेश्वरवादी गैर-मुस्लिमों से सुनते हैं कि उन्हें विश्वास नहीं था कि धरती पर एक ऐसा

धर्म भी है, जो केवल एक अल्लाह के पूज्य होने की बात करता है। उनका मानना है कि मुसलमान मुहम्मद की इबादत करते हैं, ईसाई मसीह की पूजा करते हैं और और बौद्ध बुद्ध की पूजा करते हैं। पृथ्वी पर पाया जाने वाला कोई भी धर्म उनके दिलों छूता नहीं है।

यहां हमारे सामने इस्लामी विजयों का महत्व स्पष्ट होता है, जिनका बहुत-से लोगों द्वारा बेसब्री से इंतजार किया गया था और आज भी किया जा रहा है। उन विजयों का उद्देश्य "धर्म के मामले में कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं है" के दायरे में एकेश्वरवाद के संदेश को पहुँचा देना होता है। वह भी इस तरह कि दूसरों का सम्मान बाकी रहे और वे अपने धर्म पर बाकी रहने और अमन तथा सुरक्षा का उपभोग करने के बदले में हुकूमत के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियाँ अदा करें। जैसा कि मिस्र, स्पेन तथा अन्य बहुत-से देशों को विजय करते समय हुआ।

දුස්මාමය පිළිබඳ ජරණ හා පිළිතුරු

📄📄📄📄: <https://www.dhammadownload.com/22/22/2222/61/>

📄📄📄📄 📄📄📄📄: <https://www.dhammadownload.com/22/22/2222/61/>

📄📄📄📄📄 21📄📄 📄📄📄📄 2026 07:58:42 📄📄